भारत सरकार

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

हिंदी शिक्षण योजना(परीक्षा स्कंध)

हिंदी शब्द संसाधन/टंकण परीक्षा - जुलाई 2023

बैच - I प्रश्न पत्र - द्वितीय

समय :10 मिनट पंजीकरण सं. - ..... पूर्णांक : 50

(स्ट्रोक्स)

भारत में दिखने वाले विरोधाभास और संघर्ष अनेक हैं। मैंने अनेक दिल 74
तोडने वाले धक्के भी सहे हैं। फिर भी परिवर्तन के प्रमाण स्पष्ट हैं और निरंतर बढ 162
रहे हैं। कभी-कभी आलोचक किसी सफलता के विषय में कहते हैं। इससे कुछ साबित 239
नहीं होता। यह तो भारत की गरीबी के समुद्र में एक बूंद की तरह है। यह कितना 315
गलत है, क्योंकि हर सफलता आने वाली सफलता के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। 387
यह सिद्ध करती है कि सफलता संभव है। 422

वास्तव में यह हमारी प्रमुख समस्या है। बरसों पहले हम लोग जब गांवों में 494
जाकर लोगों को समझाते थे कि आप लोग बेहतर जीवन के लिए प्रयत्न करें, तो वे 568
उलटकर हमसे ही कहते थे इससे अच्छा जीवन संभव नहीं। ईश्वर की यही इच्छा है। 651
यही हमारे भाग्य में लिखा है और इसी को हमें भोगना है। आज एक भी आदमी 726
ऐसा नहीं कहता। आज केवल एक ही मांग है और वह है सुखी जीवन की मांग। मेरे 801
विचार में यह अपने आप में एक बहुत बड़ी सफलता है। आपने प्रजातंत्र की बात 876
की। मैं एक घटना का वर्णन करना चाहती हूं जो मैंने अभी थोड़ी देर पहले 950
उपराष्ट्रपति जी को सुनाई थी। यह हमारे प्रथम चुनाव के समय की बात है। मैं एक 1031
ऐसे गांव में भाषण देने गई, जहां एक दिन पहले विरोधी दल के एक नेता भाषण दे 1113
चुके थे। जब मेरा भाषण समाप्त हो गया तो श्रोताओं में से एक वृद्ध सज्जन खड़े 1193
हो गए और उन्होंने कहा, आपने जो कुछ भी कहा है, हमने उसे बड़े ध्यान से सुना 1274
है, किंतु अभी कल ही कोई व्यक्ति आए थे और उन्होंने ठीक आपसे उल्टी बातें 1354
कही थीं। आप में से कौन आदमी सही बोल रहा है। 1402

जैसा कि हम जानते हैं, दुनिया की निरक्षर जनता का तीसरा भाग भारत में 1472
है। फिर भी हम लोग निरक्षरता को बहुत तेजी से समाप्त कर रहे हैं । महाराष्ट्र में 1550
एक के बाद दूसरा गांव पूर्ण साक्षरता प्राप्त करने के लिए पूरा यत्न कर रहा है। 1631
माता-पिता अपने बच्चों से पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं, ताकि उनके गांव की इज्जत 1713
बढ़े। मद्रास में लोगों ने अपने स्कूलों का सुधार करने का बीड़ा उठा लिया है। उन्होंने 1798
दस करोड़ से भी अधिक रुपया इस काम के लिए दिया है। यह सरकार द्वारा अपने 1871
स्कूलों पर खर्च की जाने वाली राशि से भी ज्यादा है। पंजाब में छोटे-छोटे कारखाने 1956
फैक्ट्री और पंप बना रहे हैं। इससे देहातों में क्रांति मच गई है। 2020